झारखंड के खेलों पर पहली पीएच.डी.

-झारखंड के खेलों पर राज्य का पहला पीएच.डी शोध प्रबंध

-हॉकी और तीरंदाजी से राज्य के विशेष जुड़ाव का विश्लेषण.

-रांची, खूंटी, गुमला और सिमडेगा जैसे जिलों से ही अधिकांश हॉकी खिलाड़ियों के निकलने के कारणों पर चर्चा.

-शोध प्रबंध छह अध्यायों में विभक्त है.

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में ईसाई मिशनरियों के 1845 में झारखंड आगमन के पश्चात राज्य के खेलों की स्थिति और उसमें आये परिवर्तनों के विभिन्न आयामों का वर्णन.

2. राज्य में विभिन्न खेलों की उत्पत्ति, उसकी विकास यात्रा, खेल संघों की गतिविधियां और उपलब्धियों का लेखा-जोखा. झारखंड के परंपरागत खेलों (छूर, बित्ती, गोटी, कित-कित आदि) का विस्तारपूर्वक वर्णन. राज्य के खेलों के विकास में टाटा स्टील के योगदान की विशेष चर्चा.

3. राज्य की जनजातीय महिला खिलाड़ियों की सफलताओं का उल्लेख.

4. झारखंड की खेल नीति का अन्य राज्यों और राष्ट्रीय खेल नीति से तुलनात्मक अध्ययन.

5. राज्य के खिलाड़ियों की आर्थिक समस्याओं की विस्तृत जानकारी.

6. राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़नेवाले राज्य के सैकड़ों सितारे खिलाड़ियों की उपलब्धियों का विस्तारपूर्वक वर्णन. गुमनाम खिलाड़ियों के बारे में जानकारी.

-शोध परिशिष्ट में 34वीं राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी के पश्चात राज्य के आधारभूत खेल संरचना में आये व्यापक परिवर्तन की चर्चा.

शोधकर्ता : **शाहनवाज कुरैशी**

शोध विषय : **झारखंड में खेलों का इतिहास (1858-2007)**

शोध निदेशक : डा. डी.के.शरण (उपाचार्य, इतिहास स्नातकोत्तर विभाग, रांची विवि, रांची

शोध समर्पित : (मां) स्व आमना खातून

अनुभव : 14 वर्ष खेल पत्रकारिता

वर्तमान : सहायक शिक्षक, बाल कृष्ण 2 उच्च विद्यालय, रांची